ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-2*March (Supplementary Issue)-2018
Innovation The Research Concept

उत्तरसीताचरितम् में नारी जागरण

सारांश

महामहोपाध्याय श्री रेवा प्रसाद द्विवेदी सनातन जी ने अपने महाकाव्य उत्तरसीताचरितम् में सीता को आधुनिक नारी के समान अपना निर्णय लेने वाली बताया है जो अपने परिवार का व अपना भला–बुरा स्वंय सोचने वाली है ना कि कोरी मान्यताओं को सहन करने वाली है। सीता का यह आचरण पितृ सत्तात्मक परिवार को चुनौती देने वाला है। सीता का यह स्वरूप पुरुष का मूल अनुगमन करने में पति राम को विचार शून्य जानकर सीता ने अपना पत्नी धर्म निभाते हुऐ स्वंय वनगमन का निर्णय लेकर यह सिद्ध किया है कि वह आत्मबल, आत्मक्षमता व स्वंय सही गलत का निर्णय लेने में समर्थ है जो कि वर्तमान समय में महिला सशक्तिकरण का मुख्य बिन्दु है।

जयनन्दिनी सिंह
शोध छात्रा,
संस्कृत विभाग,
राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय,
झालावाड़, राजस्थान

अल्का बागला
व्याख्याता,
संस्कृत विभाग,
राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय,
झालावाड़, राजस्थान

मुख्य शब्द : समुपस्थापित, समप्रिया, त्वरित, प्रगल्भते, स्नहेदाह, क्षमालते, विशल्यतां, स्वी, परिहीयते, स्पृहा, दूमनुमन्यतान्तमाम्, शैत्य विप्रकर्षमिह, वामविधायिनि, समीहते, वगाहा, वगाहितुं।

प्रस्तावना

बीसवीं शताब्दी में यह गौरव का विषय है कि रेवाप्रसाद द्विवेदी प्रणीत उत्तरसीताचरित तथा अभिराजराजेन्द्र मिश्र सृजित जानकी जीवन उभय महाकाव्यों में सीता के चरित (व्यक्तित्व) तथा सीता निर्वासन को महाकवियों ने स्वचिन्तन एवं स्वनवीन मौलिक उद्‌भावनाओं से संजोकर उत्तमोत्तम प्रकल्प के रूप में समुपस्थापित किया है। महाकवि का तृतीय सर्ग नारी चेतना नारीवाद, नारी विमर्श, नारी अस्मिता तथा महिला सशक्तिकरण से आप्यायित है। महाकवि ने सीता को सशक्त नारी के रूप में अभिव्यक्त किया है जो अपने निर्णय लेने में स्वंय समर्थ है। सीता राज्यसभा में राम की विक्रिया को देखकर स्वं ही वनगमन को तैयार होती हैं। वनगमन के लिए कवि ने बड़े ही सटीक तर्क समप्रिया (सीता) द्वारा अभिव्यक्त कराए हैं जो कि बलात् ही समस्त नारी जगत् को प्रेरित करने वाली है। कवि ने राम को निर्णय लेने में असमर्थ बताकर सीता को त्वरित निर्णय लेने वाली बताया है। महाकवि ने उद्धरण इस प्रकार हैं :–

अस्तु में भवदभीप्सिता स्थितिर्हन्त कुत्रचिदपि क्षमातले।
विश्वमस्तु तु विशल्यां गतं काममद्य सह कीर्तिभिस्तव।।

प्रस्तुत श्लोक में सीता करती हैं कि (मैं जहाँ आप चाहें, रह सकती हूँ केवल विश्वमानव को निष्कंटक रहना चाहिए, आपकी कीर्ति के साथ) सीता के कहने का भाव यह है कि यदि आपको मन में यह शंका है कि मैं अकेली गर्भिणी स्त्री कहां रहूँगी तो आप इसकी चिन्ता ना करें क्योंकि यदि आपकी कीर्ति और यश में मैं कांटा हूँ तो फिर मुझे आपके यश की स्पृहा स्वरूपा कहीं भी रहना स्वीकार है क्योंकि आपका सम्मान ही मेरा सबसे बड़ा आश्रय है। इसी बात का समर्थन सीता अनेक तर्कों को उपस्थित कर देती है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुतअर्वाचीन संस्कृत साहित्य में काव्य, नाट्य, कथा एवं समीक्षाग्रन्थों को अपनी पारखी दृष्टि व नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा, अर्थगाम्भीय व पदलालित्य से उत्कृष्टता के शिखर पर पहुंचाने वाले महामहोपाध्याय रेवाप्रसाद द्विवेदी के महाकाव्य को सुधी पाठकों के समक्ष रखना ही मेरा मुख्य उद्देश्य हैं।

उत्तरसीताचरित

आर्य! यावदवधि प्रजाहिते दीक्षितोऽसि सुखामात्मनस्त्यजेः।
स्नेहद्‌दाहसहितो ही दीपको विश्वमुज्जवलयिंतु प्रगल्भते।।[1]

(आर्य, जब तक आप प्रजाहित की दीक्षा लिऐ हुऐ हैं, आपको अपना सुख छोड़ना होगा। दीपक स्नेहदाह लेकर ही विश्व को प्रकाशित कर पाता है।) तात्पर्य है कि राजा राम के लिए प्रजा का हित व कल्याण प्रथम कर्तव्य है भले ही उसके लिए उन्हें दीपक के समान जलना पड़े या कष्ट सहना पड़े।

आर्य! यद्यपि मनस्विनीजनः स्त्रीति विश्वचनीयतास्पदम्।
लोकनायकविवेकदीपकस्तत्कृते न परिहीयते परम्।।[2]

(आर्य, मनस्विनी नारियों को कलेव स्वी होने के कारण संसार शंका की दृष्टि से देखता है और उनकी बदनामी करता है, किन्तु लोकनायक के विवेक का दीपक उनके लिए नहीं बुझता।)

प्रस्तुत श्लोक में महाकवि ने यह विडम्बना प्रकट की है कि मात्र कोमला स्त्री होने के कारण सदियों से आज तक संसार नारी को ही शंका की दृष्टि से देखकर उसकी बदनामी करता है जबकि मात्र स्त्री होना, कोमलता को धारण करना ही उसका स्वभाव नहीं है क्योंकि जो सत् व असत् की परीक्षा में निपुण पुरूष है वह अपने विवेक से उनकी शुद्धि का मापन कर ही लेते हैं अर्थात् राम की दृष्टि में तो सीता पवित्र ही है।

सीता राम को लोकापवाद से बचाने के लिए वनगमन करने का स्वयं निर्णय लेती है। सीता को यह आचरण भारतीय नारी को भारतीय संस्कृति के सर्वोच्च शिखर पर प्रतिष्ठित करने वाला है। महाकवि का कथन है–

प्राणतोपि यशसि स्पृहा गुरूः सुर्यवंशिषु हि या प्रशस्यते।
तां विभाज्य कलुषा स्नुषाऽ वो याति दूरमनुमन्यतान्तमाम्।[3]

सुर्यवंशियों में जो प्राणों से भी अधिक यश की स्पृहा प्रशंसा पूर्वक प्रसिद्ध है। उसे देख आपकी यह कलंकित पुत्रवधु दूर जा रही है, अनुमति दें।

यामि मातर इतः स्वतस्ततों यामि,
यामि विपिनं न मे व्यथा।
कीर्तिकायमवितुं सुमानुषा मृत्युतोपि
न ही जातु बिभ्यति।।[1]

इसलिए माताओं में यहां से जाती हूँ स्वयं ही जाती हूँ, और मुझे इसकी कोई व्यथा नहीं। अपनी कीर्ति की रक्षा के लिए अच्छे दम्पत्ति और सत्पुरूष मृत्यु से भी कभी नहीं डरते।

याम्हं विपिनमेकला गुरूं त्वं पुरवे पररिक्ष सर्वतः
त्यक्तधारमपि वारि शैत्यतो विप्रकर्षमिह नैव लिप्सते।।[2]

आज जल में जा रही हूँ और अकेली जा रही हूँ। तुम अपने अग्रज की रक्षा पूर्ववत् करते रहना सब प्रकार से दा ही जल धारा को छोड़ सकता है, शैत्य को नहीं।।

इन श्लोकों के माध्यम से महाकवि ने सीता की दृढ़ इच्छा शक्ति को व्यक्त किया है जो किसी भी परिस्थिति में अडिग रहने वाली है।

इन श्लोकों ने अपने स्वामी राम व उसके वंश की गरिमा को ही उच्च स्थान देते हुऐ तथा दोषरहित होने पर भी स्वयं को कलंकित कहकर, राम को अपने वनगमन की अनुमति में सहायता पहुँचाती है। अतः सीता ही राम को निर्णय लेने में सशक्त बनाती है एवं माताओं से भी अनुमति लेती है। यहाँ कवि ने सीता को आधुनिक नारी के समान अपना निर्णय लेने वाली बताया है जो अपने परिवार का व अपना भला बुरा स्वंय सोचने वाली है नाकि कोरी मान्यताओं को सहन करने वाली है। सीता का यह आचरण पितृ सत्तात्मक परिवार को चुनौती देने वाला हैं। सीता का यह स्वरूप पुरूष का मूल अनुगमन करने में नहीं बल्कि निर्भीक होकर अपने मन्तव्य को व्यक्त करने की प्रेरणा देता है। पति राम को विचार शून्य जानकर सीता ने अपना पत्नी धर्म निभाते हुए स्वयं वनगमन का निर्णय लेकर यह सिद्ध किया है कि वह आत्मबल, आत्मक्षमता व स्वयं सही गलत का निर्णय लेने में समर्थ है जो कि वर्तमान समय में महिला सशक्तिकरण का मुख्य बिन्दु है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त समस्त उदाहरणों से यह निष्कर्ष निकलता है कि महाकवि ने उत्तरसीताचरित में सीता को नारी जागरण की नायिका (नेत्री) के रूप में प्रतिष्ठित किया है। प्रत्येक नारी को सीता की तरह जीवन जीने की प्रेरणा दी है। धन्य है सीता की प्रतिभक्ति, धन्य है प्रजाहित और पति की कीर्ति के लिय आत्मत्याग। निश्चित ही द्विवेदी जी की सीता अधिक सजीव और उदात्तचरितान्विता है। जैसा कि पुस्तक के आशिषः में डॉ. चिन्तामणि ने लिखा है–

भवतां सीता कालिदा सीतातोऽधिकं
सप्राणा समधिकमुदात्ता च।

सीता के द्वारा महाकवि ने नारी के अस्तित्व, सत्ता, अस्मिता, स्वाभिमान को प्रतिष्ठित किया है। महाकवि ने सीता के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन को निरूपित कर उसे नवीन क्रांति लाने वाली असाधारण महिला के रूप में चित्रित किया है। यदि आज की नारी सीता के इस रूप का अनुकरण करे तो उसे कभी भी किसी परिस्थिति में अभागेपन का रोना, भाग्य को कोसना नहीं पडेगा। वह अपनी क्षमताओं को पहचानकर उसका ही उपयोग करने में सफल होगी। महाकवि की सीता नारीवादी चेतना से युक्त महिला सशक्तिकरण की अन्वर्थ सांस को चरितार्थ करने वाली एक सशक्त तेजस्विनी दृढ़ शक्तिशाली, आत्मबल से युक्त, निर्भि साहर्मा, स्वविवेक से निर्णय लेने वाली नारी है। सीता के माध्यम से कवि ने आधुनिक नारी को स्फूर्ति प्रदान की है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

1. *रामचरितमानस तुलसीदास गीता प्रेस, गोरखपुर*
2. *रामायण के कुछ आदर्श पात्र जयदयाल गोयन्द का गीता प्रेस, गोरखपुर*
3. *जानकी जीवनम् राजेन्द्र मिश्र वैजन्त प्रकाशन, इलाहाबाद*
4. *भारतीय साहित्य का विन्ट्रनिट्ज मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली सन् 2008*
5. *रामकथा के पात्र डॉ भ. ह. राजूरकर प्रकाशक ग्रन्थम्, रामबाग, कानपुर–12,*

पाद टिप्पणी

1. *उत्तरसीताचरित–3/10*
2. *तत्रैव–3/14*
3. *तत्रैव–3/25*
4. *उत्तरसीताचरित – 1/32–35*